दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 52* ❑ *अंक-12* ❑ *दिल्ली* ❑ *अप्रैल, 2014 (द्वितीय)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

ताकि सनद रहें

न तो मोदी भेड़िया है, और न ही काला नाग है भाजपा

● डा. सुमनाक्षर

देश के दलित, शोषित और अल्पसंख्यकों को भारतीय जनता पार्टी और उसके घोषित प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी के खिलाफ यह कहकर डराया जाता है कि भाजपा ब्राह्मणवादी पार्टी है जो उन्हें कुचलकर रख देगी और गुजरात का मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी हिन्दूवादी नेता है जिसे अल्पसंख्यक फूटी आंख में भी एक क्षण नहीं सुहाते। हमारे दलित–शोषित व अल्पसंख्यक बिना सोचे–विचारे उनकी इन गलत बातों पर विश्वास कर पुनः उन स्वार्थी और ढोंगी लोगों के झांसे में फंसकर अपने मानवीय अधिकारों से वंचित होकर मन मारे जीते रहते हैं।

बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर आजीवन ब्राह्मणवाद के साथ–साथ महात्मा गांधी नीत कांग्रेस के खिलाफ जूझते रहे। कांग्रेस ने तो पहले उन्हें संविधान निर्मात्री सभा में आने से रोका, पर एडवोकेट जोगेन्द्र मंडल के सहयोग से जब वे प. बंगाल की सीट से संविधान निर्मात्री सभा में चुनकर आये तो कांग्रेस ने बड़ी लाचारी व बेबसी में निर्धारित समय में भारतीय संविधान निर्माण का काम उन्हें सौंपा गया। पर कांग्रेस ने संविधान निर्माण के महान कार्य की प्रशंसा करने के स्थान पर लोकसभा के पहले निर्वाचन में उन्हें लोकसभा के द्वार तक पहुंचने से रोकने के लिए उन्हें कांग्रेसी उम्मीदवार एन.एस. काजरोलकर के हाथों एक षड्यंत्र के तहत हरवा दिया। इसके बाद वह राज्य सभा में चुनकर आये। जीवनपर्यन्त कांग्रेस पार्टी ने उन्हें अत्यन्त प्रतिभाशाली होते हुए भी कभी सम्मान नहीं दिया। वह आजीवन दलित आदिवासी और शोषितों के अधिकारों की लड़ाई लड़ते रहे। कांग्रेस के साथ अपने कटु अनुभवों के आधार पर उन्होंने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है–''वाट कांग्रेस एंड गांधी हैव डन टू दी अनटर्चबल्स'' (कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया?) बाबा साहब डा. अम्बेडकर प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के कहने पर ही देश के कानून मंत्री के रूप में 'हिन्दू कोड बिल' लाये थे जो महिलाओं को पुरुषों की तरह सत्ता व सम्पदा में बराबर ही हिस्सेदारी देने से सम्बन्धित था। पर जब सदन में उसे पास करने से कांग्रेसी सांसदों ने ही इसका विरोध किया तो आखिर में बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने कानून मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया। उन्होंने सार्वजनिक सम्मान के सामने अपमानित होकर कानून मंत्री पद पर बने रहना उचित नहीं समझा। उनके लिए 'आत्मसम्मान' सबसे बड़ी चीज थी।

दलितों के मसीहा बाबू जगजीवन राम ने देश के दलित–अछूतों को कांग्रेस पार्टी के साथ जोड़कर कांग्रेस को मजबूत किया, पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर के 6 दिसम्बर, 1956 को हुए महापरिनिर्वाण के बाद कांग्रेस में बाबूजी की उपेक्षा शुरू हो गई। कांग्रेसी नेताओं ने उनकी बढ़ती लोकप्रियता और कांग्रेस में वरिष्ठता को 'कामराज प्लान' के षड्यंत्र के तहत झटका देकर उन्हें केन्द्रीय मंत्री पद से हटाकर घर बैठा दिया, ताकि पं. नेहरू के बाद वह प्रधानमंत्री पद के दावेदार न बन सकें। हुआ भी ऐसा ही, पं. नेहरू की मृत्यु के बाद पहले लाल बहादुर शास्त्री, फिर सीधे श्रीमती इन्दिरा गांधी को प्रधानमंत्री बना दिया गया। सन् 1971 में भारत–पाक युद्ध में रक्षा मंत्री के रूप में विजय बाबू जगजीवन राम ने दिलवाई, पर उस विजयश्री का श्रेय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने सिर लेते हुए 'भारत रत्न' की उपाधि अपने नाम कर ली। कांग्रेस में बार–बार अपमान के घूंट पीते हुए आखिर में 1977 में उन्हें कांग्रेस पार्टी से छुटकारा लेना पड़ा। पर इसके बाद जनता पार्टी में भी उनके साथ विश्वासघात किया गया और उन्हें 'प्रधानमंत्री' पद से विमुख रख दिया गया। आखिर में उससे अलग होकर उन्हें अपनी अलग पार्टी कांग्रेस (जे) बनाई, पर जिन दलितों के लिए सारी जिन्दगी संघर्ष करके उन्होंने 'आरक्षण' पूरी तरह लागू करके उन्हें सरकार व शिक्षण संस्थानों में नौकरियां दिलवाईं, उन्होंने बाबूजी की आकांक्षा और आशा के रूप में उनका साथ नहीं दिया। इसी सोच में वे बीमार होकर हमारे बीच से चले गये। वे दलितों के सम्मान व समता के लिए पूरे जीवन संघर्ष करते रहे, पर क्या हम उन्हें उतना सम्मान दे सके, जबकि अन्य पार्टियों ने उनके साथ कदम–कदम पर धोखा किया और अपमानित किया। हालांकि श्री जय प्रकाश नारायण के साथ जनता पार्टी में शामिल भाजपा के नेता 1977 में चुनाव जीतने के बाद बाबूजी को प्रधानमंत्री बनवाना चाहते थे, जबकि जनता पार्टी के अन्य नेता चौ. चरण सिंह, आचार्य कृपलानी, मोरारजी भाई ने सीधे उनका विरोध करके उनके साथ विश्वासघात किया। पर बाबूजी जब तक जीये, सम्मान के साथ जीये।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

दलित एजेंडा

अपना वोट किसको दें?

1. जो **S.C./S.T.** का नौकरियों व शिक्षण संस्थानों में 'आरक्षण कोटा' के पदों का 'बैकलॉग' विशेष अभियान के तहत भरने का आश्वासन दे।
2. जो आरक्षण कोटा के अन्तर्गत पदोन्नति में आरक्षण दिया जाने का वायदा करे।
3. जो प्राइवेट कम्पनियों व उद्यमों में भी 'आरक्षण कोटा' लागू कराने का वायदा करे।
4. जो सेना, प्राधिकरण, राज्यसभा, न्यायालय–सभी में आरक्षण कोटा लागू कराने का वायदा करे।
5. जो सभी सरकारी खरीद व वितरण में तथा सरकारी ठेकों तथा सरकार द्वारा पोषित संस्थानों में दलित आरक्षण कोटा निर्धारित करने का वायदा करे।

डा. अम्बेडकर पुरस्कारों की घोषणा

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने भारतरत्न बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर की 123वीं जयन्ती के शुभावसर पर वर्ष 2014 के **डा. अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय** व **राष्ट्रीय पुरस्कारों** की घोषणा की है।

डा. अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार-2014

श्री जरनैल सिंह बांगड
समाज सेवक, ग्रेट ब्रिटेन (यू.के.)

रविदास सभा यू.के. के पूर्व अध्यक्ष श्री जरनैल सिंह बांगड अनेक वर्षों से देश–विदेश में दलितोत्थान कार्यों से दलित समाज में जन चेतना जाग्रत कर रहे हैं। निर्धन, बेरोजगार युवकों की सहायता करके उन्हें अपने पैरों पर खड़े कर रहे हैं। एकता, समता, स्वतंत्रता के डा. अम्बेडकर और सत गुरु रविदास जी के सन्देश को जन–जन में प्रचारित कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पारस्परिक भाईचारे को मजबूत कर रहे हैं। उनके इन कार्यों के लिए अकादमी उन्हें डॉ. अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करेगी।

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर ने बताया कि दलितोत्थान के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए **डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कारों** के लिए जिन 10 व्यक्तियों के नामों का चयन किया गया है, वे इस प्रकार हैं–

डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय अवार्ड-2014

<u>दलित समाज सेवा</u>

1. **प्रो. श्योराज सिंह 'बेचैन'**
   हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,
2. **श्री मेवालाल परमदास**
   हावड़ा, प. बंगाल
3. **श्री चन्दनमल 'नवल'**
   जोधपुर (राजस्थान)
4. **श्री एल. गोपेश्वर सिंह**
   सम्पादक–लिखुन
   इम्फाल (प.) मणिपुर

<u>दलित पत्रकारिता</u>

1. **श्री दयानाथ निगम**
   सम्पादक : अम्बेडकर–इन–इंडिया
   लखनऊ (उ.प्र.)

<u>दलित मीडिया</u>

1. **श्री जेम्स रोयल**
   प्रबन्धक निदेशक, बहुजन न्यूज, पिंजोर (हरियाणा)

<u>दलितोत्थान कार्य</u>

1. **श्री रविदत्त शर्मा**
   समाजसेवक, दिल्ली
2. **डा. संदीप डी. प्रभुगांवकर**
   सिरोडा (पोंडा) गोवा

<u>दलित प्रेरक</u>

1. **स्व. दशरथ मांझी**
   माउन्टेनमेन, गहलोर घाटी, अन्तरी ब्लाक, गया (बिहार)

<u>दलित कला व संस्कृति</u>

1. **डा. (श्रीमती) वसुधा श्रीनिवास**
   बंगलौर, कर्नाटक

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर ने बताया कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी के 30वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन, नई दिल्ली में 12 दिसम्बर, 2014 को उपरोक्त महानुभावों को पुरस्कार में शाल, शील्ड, प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। ●

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/-
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/-
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर
(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)
233, टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-110009
फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

देवदासी प्रथा : जघन्य अपराध

● चन्दन सिंह चौहान

बाल एवं महिला उत्पीड़न का ताजा और दर्दभरा उदाहरण भारत वर्ष में कोई हैं तो वह देवदासी प्रथा। इसमें अछूत महिलाओं के शारीरिक शोषण का धार्मिक पहलू है। मानवीय देह व्यापार का घिनौना कृत्य जिसमें अछूत कन्याओं को देवी–देवताओं की सेवा के बहाने उनकी युवावस्था में धर्माधिकारी लोग मंदिर के नाम पर दैहिक कर उन्हें वेश्यावृति का एक जरिया बनाते हैं। इन लड़कियों को ये खबर नहीं होता है कि वे एक भयानक षड्यंत्र का शिकार होने जा रही हैं। केवल शूद्र जाति की लड़कियों को ही देवदासी बनाया जाता है, जो भारत के हाईटेक कहलाने वाले राज्यों में आज भी प्रचलित होना सभ्य समाज में चुल्लू भर पानी में डूबने जैसी स्थिति है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में निचली जाति की औरते उच्च जाति के पुरुषों की अंकशायिनी बनकर रहे, ऐसा धार्मिक विधान रच कर उसमें विभिन्न पौराणिक गाथाएं बनाई गईं। और उनसे होने वाली औलादों को हरि की औलाद (हरिजन) कहकर पुकारा जाता है। उफ्! कलेजा मुंह को आ जाता है हमारा। जैसा कि अधिकांश लोग जानते ही होंगे भारत के कुछ हिस्सों में देवदासी प्रथा है। इस प्रथा के तहत अपनी कन्या को लोग किसी मंदिर को दान कर देते हैं। दक्षिण भारत में ये लड़कियां देवी ये लम्मा को समर्पित की जाती हैं। देवदासी होने का छदम अभिप्राय ही यौन कर्म हो गया। अब तो देवदासियां सीधे देह व्यापार में धकेल दी जाती हैं। अभिप्राय अब छद्म भी नहीं रहा। यह घृणित प्रक्रिया साफ, खुली और बेशर्म हैं। हालांकि देवदासी प्रथा निरोधक कानून 1988 में ही आ गया है, मगर प्रथा जारी है। लोगों के अंधविश्वास ने इसे जिंदा रखा है।

1. यदि घर में पुत्र जन्म नहीं होता तो वे अपनी पहली पुत्री को देवी येलम्मा को दे देते हैं ताकि येलम्मा प्रसन्न होकर उन्हें पुत्र प्रदान करें।

2. घर में कोई बीमार है, तो उसके ठीक होने की मानता लेकर भी घर की अन्य को मंदिर को दान कर दिया जाता हैं।

3. कोई लड़की दो मुंहे बाल लेकर पैदा हो, तो उसे अपशकुनी मानकर मंदिर में चढ़ा दिया जाता हूं।

भारतीय स्वास्थ संगठन के अनुसार कर्नाटक और महाराष्ट्र से लगभग तीन लाख यात्री येलम्मा देवी के मेले में आते हैं। यहां हर वर्ष हजारों मासूम लड़कियों को देवदासी के रूप में देवी को समर्पित किया जाता है। जिनकी उम्र 9 से 15 वर्ष तक होती है। ईसा की नौवी सदी में दक्षिणी भारत में इन विशाल मंदिरों में राजाओं ने छोटी उम्र की सुंदर–सुंदर कन्याओं को दान देना शुरु किया था। देवता और भगवान के प्रतिनिधि के रूप में पहले तो मंदिर के पुजारियों और पुरोहितों ने सहर्ष स्वीकार किया था परन्तु बाद में यही कन्याएं इन्ही पुरोहितों और पुजारियों के भोग सामग्री बन गई। समारोहपूर्वक नन्हीं, नौ–दस साल की बच्ची के गले में देवी येलम्मा की कंठी के दानों की माला पहना दी जाती हैं और बच्ची इस नन्हीं अवस्था में ही मंदिर को सौंप दी जाती हैं और इस नन्हीं अवस्था में ही उसका यौन शोषण शुरू हो जाता है। आजकल तो ये बच्चियां सीधे ही रेडलाइट एरिया में ही भेज दी जाती हैं।

समय : माघ पूर्णिमा
(14 फरवरी 2014)

कार्य : अछूत वर्ग की मासूम कन्याओं को यलेम्मा देवी को समर्पित करना ताकि वे देवी–देवता को पंखा झलना, दीपक जलाना, सफाई करना और पुजारियों की 'सेवा' करना।

देवदासी बनाने की उम्र :
9–14 वर्ष की अविवाहित कन्या।

स्पर्श समारोह : कर्नाटक के बेलगाम जिले में माघ पूर्णिमा को करीबन 12,000 बालिकाएं देवी येल्लमा रेणुका को अर्पित की जाती हैं और रजस्वला हो जाने पर उसकी नीलामी की जाती हैं जिसे स्पर्श समारोह कहा जाता है।

प्रमुख अनुसूचित जातियां :
होर्लस, मर्दास और समर्गस

प्रतिबंधात्मक कानून : सन् 1934, 1982 व 1988 के कानूनी प्रावधान

संतान का पिता : हरि (भगवान) कहलाता है, जिसकी संतान या जन को जिसे सरलता की दृष्टि ने नरसी भगत एवं गांधीजी ने 'हरिजन' कहा।

शोषण का आधार : धार्मिक तौर पर कन्याओं को मंदिर की सेवा के बहाने समर्पण करना, तदुपरान्त पुजारियों एवं पुरोहितों की अंकशायिनी बनना व बाद में पूरे गांव की सार्वजनिक सम्पत्ति घोषित करना।

प्रभावित राज्य : महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडू और आंध्र प्रदेश के कुछ सीमावर्ती इलाकों में पूरे जोरों पर हैं।

अन्य नाम : जोगतीन, अराधीन, देवदासी, जेजुरी व मुरलीस (महाराष्ट्र), भोगम वंधी, जोगिन (आंध्र प्रदेश), महारिश (केरल), थेवर दीयार, परोपाती (तमिलनाडू), जोगती (राजस्थान), नाटिस (आसाम व बंगाल), बासविस (कनार्टक), भावनिस (गोवा), और कुदीदार (पश्चिमी तटीय क्षेत्र)।

प्रथा का प्रमुख कारण : गांव के धनी जमींदार व सम्पन्न लोग धार्मिक अंधविश्वासों का लाभ उठाकर गांवों के शूद्रातिशूद्र जाति परिवारों की कन्याओं को बहला–फुसलाकर देवी येलम्मा को समर्पित करवा देते हैं। इन गरीब परिवारों को ये धनी लोग बहका देते हैं कि अगर वो अपनी लड़की को देवी को नहीं देंगे तो देवी क्रुद्ध हो जाएगी और गांव में बीमार फैल जाएगी या कोई बाढ़ आ जायेगी। इस कारण भोले भाले लोग ऐसे इन अंधविश्वासों में फंसकर लोग अपनी बेटियों को मंदिर में चढ़ा देते हैं, देवता के साथ उसकी शादी कर दी जाती हैं, उसके गले में कांच के मनकों का मंगलसूत्र पहना दिया जाता है। उनको यह शपथ भी दिलाई जाती है कि वह उम्रभर कुंवारी रहेगी। यह देवता व उसके भक्तों की तन–मन सेवा करेगी।

युवा देवदासी : मंदिर में देवता को समर्पित जब वह देवदासी कन्या जवान हो जाती है, संबंधित मंदिर का पुजारी भड़वाई करके उसकी कीमत लगाया है. उसके बाद वह पुजारी ही उसका दल्ला बनता है। युवावस्था में इन देवदासियों की बकायदा समारोह का आयोजन करके उसकी बोली लगाई जाती है। अधिक राशि देने वाला की वह देवदासी हो जाती है। जब तक वह चाहे उसकी भोगन रहती है, तब गांव के धनी व समृद्ध लोग इसकी बोली लगाते हैं। उस समय एक समारोह का आयोजन किया जाता है। जो भी व्यक्ति अधिक कीमत लगाया है, उसे ही देवदासी कन्या को प्रथम बार भोगने का अवसर मिलता है। वह जितने दिन तक चाहे वह देवदासी को अपने पास रख सकता है। उस व्यक्ति को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उसके बाद जब चाहे उस देवदासी को घर से निकाल देता है और इस प्रकार उसकी जिंदगी की बर्बादी का समय शुरू हो जाता है, एक समय उसे तो अपना पेट भरने के लिए भीख तक मांगनी पड़ती हैं। जवानी की उम्र में ही वह बूढ़ी लगने लगती है। कई बीमारियों से ग्रस्त होकर जल्दी ही मौत के आगोश में चली जाती हैं। जहां एक ओर हमारे सभ्य समाज में वेश्याओं को हीन भावना से देखा जाता है वही पर समाज के ठेकेदार इस देवदासी कुप्रथा द्वारा नारी को नरक में धकेल रहे हैं।

क्या मूलनिवासी बहुजन हिन्दू नहीं हैं?

● स्वामी आनन्द गौतम

भारतीय मूलनिवासी बहुजन न तो कभी हिन्दू थे और न तो आज भी हिन्दू हैं। सवर्ण जनेऊधारी हिन्दू जिसको अछूत/शूद्र कहते हैं, जिसको अपने घर में जाने नहीं देते, जिसको अपने द्वारा पर चारपाई पर नहीं बैठाते, जिसको अपने मंदिर/देवालय में पूजा से रोकते हैं, जिसको अपने कुएं से या हैण्डपम्प से पानी नहीं लेने देते, जिससे खानपान/भोज–भात का व्यवहार नहीं रखते, जिसके साथ रोटी–बेटी का नाता/रिश्ता कायम नहीं करते, वह कैसे हिन्दू माना जायेगा? बहुजनों को जबरन हिन्दू बनाकर हिन्दुत्ववाद सफल नहीं होगा।

नस्लवादी, कट्टरपंथी, धार्मिक आतंकवादी हिन्दुत्वादियों के शब्द, ''भारतीय/जनतांत्रिक, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिन्दू राष्ट्रवाद'' इत्यादि प्रचारवादी शब्द सभी धोखेबाजी के शब्द हैं। हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है–इसका मतलब है–''ब्राह्मणत्व ही हिन्दुत्व/राष्ट्रीयत्व है।'' शब्द ''हिन्दू धर्म' पर्दे की आड़ में है 'ब्राह्मण धर्म।''

सम्पूर्ण संसार में ''समाजवाद, साम्यवाद, जनतंत्रवाद, गणतंत्रवाद, लोकतंत्रवाद'' की स्थापना का संघर्ष जारी है। इसलिये कट्टरपंथी/आर्यपंथ/ ब्राह्मणवादी पार्टी भाजपा ने अपना गठबंधन बनाया, ''राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन।'' धार्मिक कट्टरपंथी/धार्मिक कट्टरपंथी, कदापि जनतांत्रिक/गणतांत्रिक नहीं बन सकता। समय का तकाजा है कि आज ''आर्यपंथी, नस्लवादी कट्टरपंथी, धार्मिक–आतंकवादी, सर्वसत्तादी उन्मादी ब्राह्मणवादी'' छद्मवेशधारी मुखौटा लगाकर सभी ''समाजवादी, साम्यवादी, जनतंत्रवादी, गणतंत्रवादी, लोकतंत्रवादी'' आन्दोलन का समर्थन कर रहे हैं।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन–राजग, संघवादियों द्वारा निर्मित पार्टी भाजपा की घटक–गठबन्धन है। भारतीय जनता पार्टी, पर्दे की आड़ में है ''ब्राह्मण जाति पार्टी।'' भाजपा=बीजेपी=ब्राह्मण जाति पार्टी। मूलनिवासी बहुजन भाजपा का विकल्प सोचें। कांग्रेस पार्टी दिखावटी तौर पर थोड़ा कम 'नस्लपंथी/कट्टरपंथी धार्मिक/ राजनीतिक आतंकवादी है।'' ब्राह्मणवादी मार्क्सवादी/साम्यवादी ''हिन्दुतत्ववादी, वर्णवादी, जातिवादी'' होते हुये कैसे सच्चे क्रांतिकारी मार्क्सवादी/साम्यवादी हो सकते हैं? हमको कांग्रेस, भाजपा, कम्युनिस्ट तीनों का जोरदार विकल्प खड़ा करना होगा।

भारतीय राजनीतिक परम्परा में सभी पार्टी, दल, मोर्चे के नेतागण अनैतिक, धार्मिक उन्मादी आधार पर जातिवादी/साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के हिमायती होते हैं। भाजपा हिन्दुओं (ब्राह्मण नियंत्रित पिछड़ा वर्ग) को डराकर उनमें असुरक्षा की भावना को जगाती है। कांग्रेस तथा समाजवादी पार्टी/अन्य पार्टी मुसलमानों में असुरक्षा की भावना को उभारती है।

आज सामान्य हिन्दू 'हिन्दुत्ववादी' नस्लीय कट्टरता एवम् अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनाने के नाम पर बहुत उत्साहित नहीं है। मुसलमान भी अपने कट्टरपंथी/ धार्मिक उन्मादी मध्ययुगीन इस्लाम की भव्य कल्पनाओं से उबर चुके हैं।

नस्लवादी, कट्टरपंथी, दानवतावादी धार्मिक आतंकवादी प्रत्येक धर्म, नस्ल, कौम, वर्ण, जाति, वंश में पाये जाते हैं। सभी धर्मों के नवयुवक, स्त्री–पुरुष आज शिक्षा, रोजगार एवम् परिवार की उन्नति पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

समाजवाद की भावना धीरे–धीरे व्यापक स्वरूप धारण करती है। समाजवाद की विकसित व्यवस्था है 'साम्यवाद।' साम्यवाद की विकसित व्यवस्था है 'लोकतंत्र/गणतंत्र।' भारत में गणतंत्र का जन्म समय से पहले हो गया।

भारत में दबंगतंत्र, नस्लतंत्र, माफिया–तंत्र कायम है। भारत में ''जनवादी जनतंत्र'' कायम क्यों नहीं हुआ? सोशल डेमोक्रेसी की जगह भारत में ''रेसियल/सेक्टेरियल फैनेटिक डेमोक्रेसी'' कायम है। पूंजीवाद से समाजवाद पैदा होता है। ब्राह्मणवादी निरंकुश पूंजीवाद से ब्राह्मणवादी निरंकुश समाजवाद पैदा हुआ। मूलनिवासी बहुजनों को सर्वत्र पूंजी के स्रोतों में समान भागीदारी प्राप्त नहीं हुई।

सबका एक ही विकल्प है निरंकुश ब्राह्मणवादी शासन प्रणाली का मूलोच्छेदन और सबका यानी बामसेफ बहुजनों का अपना स्वतंत्र गठबंधन–''मूलनिवासी जनतांत्रिक गठबंधन – मूजग'' की स्थापना। कार्ल मार्क्स का समाजवादी सिद्धान्त ब्राह्मणवादी तानाशाही उखाड़ फेकने का सिद्धान्त है। डा. अम्बेडकर का भी समाजवादी सिद्धान्त 'नस्लवादी, कट्टरपंथी, राजनीतिक आतंकवादी ब्राह्मणवादी शासन' को उखाड़ फेंकने का सिद्धान्त है। दोनों सिद्धान्तों का साझा प्लेटफार्म निर्माण करना 'बहुजन राष्ट्र' के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण कदम है। ●

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
233, टैगोर पार्क, माडल टाउन,
दिल्ली-9

आजीवक चंड अशोक

अशोक ने
बुद्धम् शरणम् गच्छामि कहा
सारी दुनिया बौद्ध हो गई।
अशोक देख रहे हैं
दुनिया को बौद्ध होते
भारत तो बौद्धमय ही हो गया।
एक पत्नी बिलख रही है
अपने पति को भिक्षु बनते देख
विलाप सुन रहा है चारों ओर
एक बच्चा रो रहा है
पिता को जाते देख
क्रंदन फैल गया है
चारों दिशाओं में
सूने घर, सूने गांव, सूना शहर
सारे देश में सन्नाटा पसरा पड़ा है
अशोक की आंखें पथरा गई हैं।
कोलाहल मचा है
अफरा–तफरी फैली है हर तरफ
विदेशी आक्रमणकारी आ गया है
चारों तरफ से
आवाजें सुनाई पड़ रही हैं।
बुद्धम् शरणम् गच्छामि
अशोक की आंखों में
खून उतर आया है
उसने उतार फेंके हैं भगवा वस्त्र
अशोक बन गया है
फिर से आजीवक चंड अशोक
आक्रमणकारी
और भिक्षु को तो, अब
विलुप्त होना ही था।

– कैलाश दहिया

आधुनिक समाज के निर्माता डॉ. अम्बेडकर

–प्रो. बाबूलाल चांवरिया

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू सनातन धर्म को एक नई दिशा और परिभाषा देते हुए आधुनिक परिवेश में बदलने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने महाड़ जल सत्याग्रह, कालाराम मन्दिर प्रवेश, गुरु वयुर टेम्पल आदि कई लम्बे आंदोलन चलाए। डॉ. अम्बेउकर ने धर्म को पाखंड, कर्मकांड के जाल और जातिगत असमानताओं की संकुचित परिधि में से बाहर निकाल कर मनुष्य पर केंद्रित सामाजिक विचारधारा पर बल दिया। डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा ने समकालीन विश्व के कई बुद्धिजीवियों एवं भारत के कई देशभक्तों तथा नेताओं को प्रभावित किया। महात्मा गांधी, डॉ. अम्बेडकर से सहमत नहीं थे, किन्तु बाद में उन्हें भी डॉ. अम्बेडकर के विचारों से सहमत होना पड़ा।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर जब भारत की वर्णव्यवस्था और जातिगत गन्दे पेशों पर आधारित सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध शोषित वर्ग को संगठित कर उनके अधिकारों के लिए आन्दोलन चला रहे थे, तब हिन्दू धर्म के प्रवर्तकों और प्रवक्ताओं की चूले हिल गई थी। डॉ. अम्बेडकर के तर्कसंगत प्रश्नों का हिन्दू समर्थकों के पास कोई न्यायोचित रास्ता नहीं था। वे डॉ. अम्बेडकर को नास्तिक और असंतुष्ट जिज्ञासु घोषित करने में शक्ति लगा रहे थे। इसका एक सटिक उदाहरण है कि जब भी कभी व्यक्ति कंगाली के दौर से गुजरता है तो वह सडी–गली वस्तुओं का संग्रह सम्भाल कर रखता है वैसे ही हिन्दू धर्म और उसके अनुयायी झर्झर और सड़ी–गली सामाजिक व्यवस्थाओं को सम्भाले हुए डॉ. अम्बेडकर के विरोध में खड़े रहे। यह हिन्दू धर्म की विडम्बनाओं के अतिरिक्त कुछ और नहीं था।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने रूढ़िवादी हिन्दू विचार धारा में बदलाव लाने के तमाम उपायों का ईमानदारी से प्रयोग किया। महाराष्ट्र सहित कई प्रांतों में उन्होंने दबे–कुचले वर्गों के हित में सक्रिय आन्दोलन चलाये। उनके आन्दोलन में छत्रपति शाहूजी महाराज, शियाजी राव गायकवाड़, स्वामी नारायण गुरु, रामास्वामी नायकर, अछूतानन्द 'हरिहर' आदि कई विद्वान जुड़ते रहे और बाबा साहब का कारवां बनता गया।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर और महात्मा गांधी दोनों समकालीन थे। गांधीजी की प्राथमिकता 'स्वराज्य' पहले शेष सुधार की बातें बाद में। डॉ. अम्बेडकर की प्राथमिकता पहले 'सामाजिक परिवर्तन' और उसके बाद में दलितों की राजनीतिक और आर्थिक हिस्सेदारी। दोनों के सोच में अपने–अपने वर्गहित की चिंताएं थी। दोनों के विचारों में बहुत कुछ मौलिक सिद्धान्तों में भी मतभेद था। गांधीजी पुरातन वर्णव्यवस्था और जातिवाद के समर्थक थे तो डॉ. अम्बेडकर वर्गव्यवस्था और जातियों के प्रखर विरोधी प्रवक्ता थे। गांधीजी ने दलितों को (हिन्दुओं का जड़खरीद गुलाम) हिन्दू मानते हुए उसके लिए पृथक राजनीतिक अस्तित्व का विरोध किया। जबकि डॉ. अम्बेडकर शुरु से ही हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता और दलितों के शोषण का विरोध कर दलितों के विकास के लिए पृथक राजनीतिक अस्तित्व के सहारे सशक्तिकरण चाहते थे। अस्पृश्यता के विरोध में गांधीजी का अभियान डॉ. अम्बेडकर के साथ हुए 'पूना पेक्ट' के बाद ही शुरु हुआ था। यह समझौता दोनों के बीच सैकड़ों लोगों की गवाही में 24 सितम्बर, 1932 को हुआ और गांधीजी जेल से रिहा हुए। गांधीजी ने 25 सितम्बर, 1932 को बम्बई में ''हरिजन सेवक संघ'' के गठन से अछूतोद्धार कार्यक्रम शुरू किया। देखा जाये तो डॉ. अम्बेडकर ने गांधीजी से सोलह वर्ष पहले दलितों के अधिकारों के लिए 1916 में ही आन्दोलन छेड़ दिया था।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर 1916 में अपनी शिक्षा समाप्त कर भारत लौटे तो 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' और 'मुस्लिम लीग' के बीच यह समझौता हुआ कि 'स्वराज्य' मिलने से पूर्व और पश्चात् हिन्दुओं का 70 प्रतिशत हिस्सा और 30 प्रतिशत हिस्सा मुसलमानों का राजनैतिक सत्ता पर रहेगा। इस समझौते को भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में ''कांग्रेस–लीग समझौता'' कहा जाता है, जो आगे चल कर ''एक्ट'' बनने जा रहा था। इसको डॉ. अम्बेडकर की खोजी नजरों ने देख लिया और 1916 से ही डॉ. अम्बेडकर ने भांप लिया था कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद दलितों की देश में कोई भी हिस्सेदारी नहीं होगी। दलित केवल गुलाम और सेवक ही बना रहेगा। यहां से डॉ. अम्बेडकर का दलितोद्धार कार्यक्रम शुरू होता है।

उन्होंने अंग्रेजी हुकुमत के सामने ये बुनियादी मुद्दे उठाए–सभा–सम्मेलनों के द्वारा, ज्ञापनों के द्वारा, पत्र–व्यवहारों के जरिये, मांग पत्रों के रूप में ब्रिटिश हुकूमत का ध्यान आकर्षित किया। ''मिन्टो–मोर्ले कमिशन'' आया, जातिय जनगणना जे.एच. हटन द्वारा 1921 में हुई, सन् 1930, 1931, 1932 तीन लन्दन कांफ्रेंस हुई और ''कम्युनल अवार्ड'' के द्वारा दलितों का हिस्सा तय हुआ तब जाकर गांधी एण्ड कांग्रेस पार्टी का समझ में आया कि इस देश में मूल निवासी दलित भी हिस्सेदार है, तब जाकर गांधी और अम्बेडकर के बीच 'पूना एक्ट' हुआ। इससे पूर्व गांधी एंड पार्टी ने 'कम्युनल अवार्ड' को ही खारिज कर दिया था।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने 20 जुलाई, 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना कर देश व्यापी दलितोद्धार का संकल्प किया। स्वाधीनता संग्राम में दलितों और शोषितों की उपेक्षा कर गांधीजी कामयाब नहीं हो सकते थे। इसलिए उन्हें हिन्दू समाज से जोड़कर रखने के लिए गांधीजी डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा का विरोध कर रहे थे। महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि डॉ. अम्बेडकर हिन्दू धर्म के उस समय प्रखर विद्रोही नहीं थे, बशर्ते दलितों और पिछड़ों को समानता के अधिकार मिलें और जातिगत भेदभाव समाप्त हो। वे हिन्दू बने रहने के लिए स्वतन्त्रता और समानता की आधारशिला पर भातृत्व बंधुता चाहते थे। अपने जीवन के अनुभवों के आखिरी दिनों में हिन्दू धर्म से मोहभंग होने पर ही उन्होंने 'बौद्ध धर्म' स्वीकार किया। डॉ. अम्बेडकर ने अन्य धर्मों को इसलिए स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उनमें भी जातीय संकीर्णता मौजूद थी। उन्होंने धर्मांतरण किया जरूर, लेकिन भारतीयता से दूर नहीं हुए। मूल निवासियों के लिए 'भारतीयता' एक ऐसी मानसिक स्थिति है, जो धर्म से भी बढ़कर है।

डॉ. अम्बेडकर ने आधुनिक भारत के निर्माण में जिस नवीन समाज की परिकल्पना की, उसकी तमाम सामग्री पूर्वगामी समकालीन समाजों के प्रचलित मूल्यों और स्थापित सिद्धन्तों से प्राप्त की। द्रविड और शैंधव सभ्यता के सह अस्तित्ववाद, बौद्धयुगीन वर्ण–वर्ग विहीन समाज की पुनर्स्थापना, भक्तिकाल के कबीर युग का निर्भर और निर्भय सम्प्रभुतावाद तथा आधुनिक युग का समता और स्वतत्रंतायुक्त बंधुत्ववाद एवं वर्तमान युग का वैज्ञानिक मानवतावाद आदि मूलभूत आधारशिलाओं से भारत का निर्माण किया। आधुनिक भारत में अब यह स्पष्ट है कि समाज में सभी धर्मों के लोगों को धर्मनिरपेक्ष रूप से समान अधिकार प्राप्त है। यह अनिवार्य है कि यदि देश का अस्तित्व बरकरार रखना है तो सभी को समानता का अधिकार और अवसर देकर साथ लेकर चलना होगा। डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान का ही नहीं, वरन् मजबूत भारतीय समाज का निर्माण किया है। ●

व्यक्तिगत सम्पत्ति का समाजीकरण है समाजवाद

● स्वामी आनन्द गौतम

जनलोकपाल बिल क्या है?

'जनलोकपाल बिल' का आन्दोलन सवर्ण जनेऊ–धारियों में उत्पन्न नवीन सत्ता लोभियों का आन्दोलन है। कांग्रेस पार्टी ब्राह्मणवादी, भाजपा ब्राह्मणवादी और कम्युनिस्ट पार्टी हिन्दूवादी, ब्राह्मणवादी और चौथी पार्टी भी निरंकुश, दबंग तांत्रिक ब्राह्मणवादी पार्टी खड़ी हो गई तो क्या अम्बेडकरवादियों, बहुजनों का भला होगा?

जब देश के करोड़ों लोग इस बात से सहमत हैं कि घोटाला–भ्रष्टाचार और काले धन का व्यापार खत्म होना चाहिये, परन्तु यह कैसे होगा? इस बहस पर वाद–विवाद ने वैचारिक विभाजन के हालात पैदा कर दिये हैं। 'जनलोकपाल बिल' ठीक है या नहीं, इस बहस पर जैसे समूचा देश–समाज बट गया है। जनलोकपाल बिल पर 'सत्ता–सदन' में चली अनेकों बार की ऊहापोह ने साबित कर दिया कि 'सत्ता–प्रतिष्ठान' इससे किनारा खींचना चाहता है। एक नवीन नौजवान के लिए देश की प्रगति के मार्ग पर जो रोड़ें हैं, उन्हें हटाने का सवाल है, आज व्यर्थ की बात की जरूरत नहीं है। अम्बेडरवादी बुद्धिजीवी अन्ना हजारे जैसा आन्दोलन क्यों नहीं चलाये?

आज भी पिछड़ा वर्ग, दलितों, शूद्रों, अछूतों से जुड़ने को तैयार नहीं है। मार्क्सवादी दर्शन तथा अम्बेडकरवादी दर्शन दोनों ब्राह्मणवादी, आर्यपंथी, नस्लवादी कट्टरपंथी शासन के मौत का वारंट है। इसीलिये तो आर्यपंथी, कट्टरपंथी बुद्धिजीवी ब्राह्मणों ने 'कम्युनिस्ट क्रांति' की लगाम अपने हाथ में ले ली। मगर साम्यवादी व्यवस्था में वर्ण–वादी और जातिवाद भयानक रोड़ा है। साम्यवादी ब्राह्मण भी दलितों/शूद्रों से घृणा करते हैं और उन्हें सर्वत्र भागीदारी देने को राजी नहीं हैं। सवर्णों और पिछड़ों का गठबंधन क्यों सफल नहीं हुआ है? भारतीय धरातल पर स्थापित 35–40 साल पुराना साम्यवाद क्यों उजड़ गया?

कम्युनिस्ट होने का मतलब क्या 1990 में पतन होने वाली व्यवस्था है? तब तो हम शब्द 'कम्युनिस्ट' से घृणा करते हैं। आज वहीं कम्युनिज्म रूस, चीन में सबसे योग्य क्रूरतम, आतंकवादी पूंजीवादी व्यवस्था है। आज अमेरिकी 'अनियंत्रित पूंजीवाद' के आगे रूस, चीन देशों में एकपोलीय, विपक्षहीन शासन प्रणाली कायम है जो कि निरंकुश तानाशाही (मोनोक्रेसी) का कारण है। भारत में अम्बेडकर और मार्क्सवादी दोनों जब तक परस्पर जुड़ेंगे नहीं, तब तक सच्चा साम्यवाद सफल नहीं होगा। भारत वर्ष में तानाशाही से मुक्त और विपक्षयुक्त शासन प्रणाली ही सफल होगी। सर्वहारा की तानाशाही के बदले सांसदों, विधायकों की तानाशाही का मतलब है 'संसदीय आतंकवादी शासन' की स्थापना।

जब हम ''आर्यपंथी, कट्टरपंथी, आतंकवादी। ब्राह्मणवादी–पूंजीवाद'' की आलोचना करते हैं, तो हम अपने आप को गुमराह भी न होने दें कि हम ''सामाजिक नैतिक लोकतंत्र'' के भी विरोधी हैं। हम मूलनिवासी बहुजन एक बेहतर सामाजिक, राजनीति, आर्थिक व्यवस्था चाहते हैं और हमें इसी के लिये संघर्षरत रहना होगा। हम दबंग तांत्रिक कट्टरपंथी ब्राह्मणवादी लोकतंत्र' कत्तई पसन्द नहीं करते हैं। हमें चाहिये करूणा, मैत्री, समता, स्वतंत्रता पर आधारित 'बहुजनवादी लोकतंत्र।' ●

मानव कौन होता है

अनगिनत शीपीयों में देखो
मोती कोई एक हुआ करता है।
पदम पाषाणों में कोई विरला
हीरा एक हुआ करता है।
बासों की लाखों डालों पर
बंशी कोई एक हुआ करता है।
जन गण के जंगल में कोई
मानव एक हुआ करता है।
भूले बिसरों की राहों में
दीपक कोई एक जलाता है।
पीड़ाओं में खुद भी
औरों का दर्द बांटा करता है
धन्य धन्य वह नरतन है
जो गैरों को गले लगाता है
खल दुष्टों छलबाजों से
बच कर खुद राह बनाता है।

– मेवालाल परमदास

बाबा साहब की बाईस प्रतिज्ञाएं

ब्रह्मा विष्णु महेश देव या, राम कृष्ण ईश्वर अवतार।
नहीं करूंगा पूजन इनका, झूठों का है सभी प्रचार।।
देवी, देवता गौरी गणपति, इनसे मैं हट जाऊंगा। (टेक)
छोड़ सभी पाखंड एक मैं बुद्ध शरणं में आऊंगा।।
ईश्वर ने अवतार लिया, इस पर मुझको विश्वास नहीं।
भगवान बुद्ध अवतार विष्णु के, इसकी मुझको आस नहीं।।
ये सारा प्रचार खोटा है, सबको ये बतला दूंगा। (टेक)
श्राद्ध कर्म और पिंडदान, इनका मैं करता त्यागन।
ये सारे झूठे झगड़े हैं, करूं बुद्ध का मैं वन्दन।
कर्म कोई करने के लिए ब्राह्मण नहीं बुलाऊंगा।। (टेक)
मनुज मात्र सब हैं समान, कोई ऊंच नहीं कोई नीच नहीं।
आर्य सत्य अष्टांगिक मार्ग, बुद्ध मार्ग है सही–सही।।
प्राणी मात्र पर दया रखूंगा, किसी को नहीं सताऊंगा। (टेक)
चाहे भूखा मर जाऊं पर चोरी नहीं करूंगा मैं,
जबां काट अपनी लूंगा, पर झूठ नहीं बोलूंगा मैं।
कभी नहीं व्यभिचार करूंगा, मदिरा नहीं जमाऊंगा।। (टेक)
बुद्ध धर्म की तीन तत्व पर जीवन राह चलाऊंगा।।
ज्ञान, शील, करुणा को अपने दिल के साथ लगाऊंगा।।
छुआछूत विषमता दिल से हिन्दू धर्म हटाऊंगा। (टेक)
बुद्ध धर्म ही सत्य धर्म है, इस पर मेरा है विश्वास।।
नया जन्म मैंने पाया जब बौद्ध बन गया मैं सौहल्लास।
करता हूं मैं अटल प्रतिज्ञा, अपना मन न डिगाऊंगा।। (टेक)
नव जीवन दे दिया भीम ने, बुद्ध धम्म को देकर दान।
बाइस नियम बताए हमको, सदा रखूंगा इनका ध्यान।।
बन्धु इन्हें जो न मानेगा, उसे आज समझाऊंगा। (टेक)

– सत्यवीर सिंह बौद्ध

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. डी. एल. (एन.) 07/0090/12-14
प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2014

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग.....न तो मोदी भेड़िया है, और न ही काला नाग है भाजपा

बाबा साहब के बाद बाबूजी ब्राह्मणवाद से सीधी लड़ाई लड़ते रहे, 'ब्राह्मणवाद' से उन्होंने कभी भी दलित अस्मिता से समझौता नहीं किया।

अपने को अम्बेडकरवादी कहने वाले कुछ दलित चितंक व समाजसेवक बाबूजी की इसलिए आलोचना करते हैं कि वह बाबा साहब डा. अम्बेडकर के घोर विरोधी महात्मा गांधी के साथ खड़े रहे। उन्हें पता होना चाहिए कि भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण का प्रावधान कांग्रेसी नेताओं के लाख विरोध के बावजूद बाबूजी ने गांधी जी से कहकर रखवाया था। भारतीस संविधान में दलितों के हित में प्रावधान दर्ज कराने में बाबूजी का भी योगदान रहा है।

हमारे कुछ दलित साथी अम्बेडकरवादी प्रो. बी.पी. मौर्य, संघप्रिय गौतम, दलित नेता रामधन पर सत्ता व धन के लालच में भारतीय जनता पार्टी अपनाने का आरोप लगाते हैं। अब वे ही लोग 16वीं लोकसभा के चुनावों के समय लोक जन शक्ति पार्टी के अध्यक्ष रामविलास पासवान, इंडियन जस्टिश पार्टी के अध्यक्ष डा. उदितराज और आर.पी.आई. के अध्यक्ष रामदास आठवले के भारतीय जनता पार्टी में चले जाने की आलोचना कर रहे हैं।

आलोचना करने वाले इन साथियों से मेरा यही कहना है कि वर्तमान चुनावों के सन्दर्भ में वे अपने दिल से यह विचार करें कि अपने इन दलित नेताओं व समाजसेवकों का वे तन–मन–धन से कितना सहयोग करते हैं और उनके बुरे दिनों में उन्होंने उनकी कितनी मदद की है? हम अपने नेताओं से अपने लिए काफी आशायें पाले रहते हैं, और चाहते हैं कि वे 'ब्राह्मणवाद' के खिलाफ भूखे मरते हुए भी बाबा साहब डा. अम्बेडकर की तरह लड़ते रहें और समाज की सेवा करते–करते परलोक सिधार जायें।

लोग चढ़ते सूरज की पूजा करते हैं ढलते या डूबते सूरज की ओर कोई निगाह तक नहीं करता। यही सिद्धान्त राजनेताओं पर लागू होता है। सत्ता विहीन होने पर कितने लोग अपने राजनेताओं से मिलने जाते हैं? वे तो उनसे किनारा काट कर चलते हैं कि कहीं वे उनसे कोई मांग न कर दें। हमने 'कामराज प्लान' के तहत मंत्रीपद से अलग किये जाने पर बाबू जगजीवनराम जी की बेबसी व दुर्दशा को देखा है। चुनाव हारने पर रामविलास पासवान, रामदास आठवले, उदितराज, सत्यनारायण जटिया की दुर्दशा और हताशा को देखा है जो उन्होंने दलित समाज का पर्याप्त सहयोग न मिलने के कारण पाई है। ऐसे में पुनः केवल दलित समाज के भरोसे बैठे रहना क्या 'आत्मघात' नहीं होता? इसलिए हर आदमी जो अपने–अपने परिवार, अपने समाज के हित में जो उचित मार्ग देखता है, और अगर वह उस मार्ग को अपनाता है, तो इसमें दोष क्या है? इसलिए रामविलास पासवान, उदितराज, रामदास आठवले ने अपने उज्ज्वल राजनैतिक भविष्य के लिए अगर भारतीय जनता पार्टी में जाने का रास्ता चुना है, तो उसमें किसी को ऐतराज नहीं होना चाहिए।

इन लोगों का कहना है कि अपने को 'अम्बेडकरवादी' कहने वालों को 'ब्राह्मणवादी' भारतीय जनता पार्टी में नहीं जाना चाहिए। तो क्या सारे जीवन बाबा साहब डा. अम्बेडकर का विरोध करने वाली गांधीवादी कांग्रेस पार्टी में उन्हें जाना चाहिए जो आज वंशवादी, एक ही परिवार की पार्टी बनकर रह गई है जो लोकतंत्र के नाम पर एक मजाक बनकर रह गई है, और भ्रष्टाचार, महंगाई, कुशासन की प्रतीक बन गई है? निश्चित रूप से कांग्रेस आज दलितों के लिए विनाशकारक पार्टी है जो ढोंग तो दलितों के उत्थान का करती है पर उसका राष्ट्रीय प्रवक्ता व महामंत्री जनार्दन द्विवेदी खुल्लमखुल्ला दलितों के आरक्षण को खत्म करने की बात करता है। यही नहीं, वह दलितों की सरकारी नौकरियों में पदोन्नति में आरक्षण को भी दर किनारे किए हुए है।

कम से कम भारतीय जनता पार्टी दलितों के आरक्षण कोटे के विषय में ऐसा विष वमन तो नहीं करती और न ही वहां 'वंशवाद' की बीमारी है। याद करिये, यह भारतीय जनता पार्टी ही थी जिसके शासनकाल में बाबा साहब डा. अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण स्थली–26 अलीपुर रोड (दिल्ली) वाली कोठी को जिन्दल परिवार से लेकर उसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया, कांग्रेस सरकार तो उस ओर ध्यान दे ही नहीं रही थी। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को मरणोपरांत 'भारत रत्न' का सम्मान भी गैर–कांग्रेसी वी.पी. सिंह की सरकार द्वारा प्रदत्त किया गया, जिसमें रामविलास पासवान की विशेष भूमिका थी, जबकि बहन मीरा कुमार कांग्रेसी सरकार में केन्द्रीय मंत्री एवं लोकसभा की स्पीकर रहते हुए भी अपने पिताश्री बाबू जगजीवनराम जी को मरणोपरान्त 'भारतरत्न' सम्मान नहीं दिला सकी।

भारतीय जनता पार्टी न कोई काला नाग है जो दलित समाज को निगल जायेगा और न ही नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बन जाने पर भेड़िया बनकर दलितों को खा जायेगा। भाजपा ने अपने चुनावी घोषणा पत्र कहकर अपने दलितों को उससे अलग रहने के लिए भयभीत करते हैं, पर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जो आज कांशीराम जी के बहुजन समाज के सिद्धान्तों को छोड़ 'सर्वजन' समाज पार्टी बन गई है, और जिसकी सीधी कमान व लगाम आज बसपा के राष्ट्रीय महामंत्री सतीश मिश्रा के हाथ में है और वही बसपा की अध्यक्ष बहन मायावती के साथ–साथ सारी बहुजन समाज पार्टी को निर्देशन दे संचालन करते हैं, उसके ब्राह्मणीकरक किए जाने की कोई दलित नेता व समाजसेवक उसकी आलोचना नहीं करते, बल्कि मौन धारण किये हुए हैं। मा. कांशीराम व मायावती ने पहले यह नारा देकर सारे बहुजन समाज को इकट्ठा किया था–**''तिलक, तराजू और तलवार। इनको मारो जूते चार।''**

आज इन प्रतीकों को ताक पर रखकर उन्हीं तिलकधारी ब्राह्मणों की बसपा में पूजा हो रही है और जिन हिन्दू देवताओं को कांशीराम जी जूते मारते हुए घृणा करते थे, आज मायावती उन्हीं ब्राह्मणों के देवी–देवताओं को सत्ता की भूख मिटाने के लिए सिर पर उठाये घूमती है और दलितों को यह कहकर बरगरा रही है–**''हाथी नहीं, गणेश है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश है।''**

मैं दलित समाज में भाजपा व मोदी के खिलाफ जहर घोलने वाले

भीख नहीं विकास का 'मॉडल' चाहिये

● विजयेन्द्र

मैं आम आदमी हूं। भूखा हूं। नंगा हूं। इसलिए खास नहीं हूं। मैं भारत का जन गण मन नहीं, बल्कि एक वोटरलिस्ट भर हूं, उपभोक्ता हूं, एक खरीदार हूं। मैंने भी 'भारत माता की जय' और 'मादरे–वतन' की मुक्ति का जयकारा लगाया था। अर्पण किया था और तर्पण किया था। बलिदानी विरासत को साझा किया। बड़ा सपना था कि हमारा अपने देश होगा, अपनी सरकार होगी। सबको जीने का आधार होगा और अधिकार होगा। भूख और भययुक्त समाज होगा।

हमारी नदियां, हमारे पहाड़, हमारे जंगल, हमारे खेत और खलिहान? अब हमारा नहीं रहा। सच यही है कि हम अब कहीं के नहीं रहे। हम तो बाजार के हवाले हो गए है। हम अपनी मेहनत से न तो तन ढक सकते है, न ही पेट भर सकते। ना अपने बच्चों का, न ही अपना कुटुंब को खिला सकते हैं। दरवाजे से साधु को रोज लौटते देखते हैं।

सरकार भिखारी समझ हम पर बहुत ही मेहरबान है। उधार का अनाज, उधार का कपड़ा, उधार का घर, सब कुछ खैरात की तरह सरकार हम पर लुटाये जा रही है। बगल के बाबू बिना काम का हमें मनरेगा का लाभ दे रहे हैं? कुछ वो भी और कुछ हमें भी लूटने का मौका दे रहे हैं? हमारे बच्चों को बना बनाया भोजन भी दे रहे हैं? और कपड़ा–लत्ता, सायकिल और लेपटाप भी दे रहे हैं? वाह री यह गरीब हितैषी सरकार। धिक्कार है हम पर। हमारा बच्चा स्कूल जा रहा है और साथ में कटोरा लेकर। आजादी के बाद हमारी स्थिति ऐसी भी नहीं बनी कि हम अपने बच्चे को भोजन करा सकें। हुक्मरानों के बच्चे क्यों नहीं कटोरा लेकर स्कूल जा रहे हैं? क्यों नहीं हमारे कपड़े वो पहन सकते जो हमें दिया जाता है?

हम बेवकूफ नहीं हैं। यह सवाल 'भीख' और 'भूख' से जुड़ा नहीं है। यह मेरा अधिकार है। यह देश हमारा हे। हम इस देश के लिए जिन्दगी झोंक रहे हैं। बेहतर और स्वाभिमान की जिन्दगी जीने का हमें भी हक है। बस हमारा खेत और खलिहान लौटा दो। नदी और पहाड़ लौटा दो। जल और जमीन लौटा दो। इस पर हक सिर्फ हमारा है हमारा। नहीं चाहिए तुम्हारे यह मध्यान्ह भोजन और मनरेगा। यह आग भी तुम्हारी और फायर ब्रिगेड भी तुम्हारा। यह बिल्कुल नहीं चलेगा।

हमें गुस्सा है इस तंत्र पर जिसने हमारे मासूमों को कटोरा लेकर स्कूल जाने को अभिशप्त किया है। कल हमने बिहार में जहरीले भोजन से बीस बच्चों को मरते देखा। सड़े अनाज, सड़ी सब्जियां जैसे अन्य जहर को ढकोसते देखा। हमारा यह कथित भिखारी कैसे शेष समाज के बच्चों की बराबरी करेगा? कैसे यह देश का सम्मानित नागरिक बनेगा?

बिहार में हुई बच्चों की मौत पर सियासत हुई। हमारा क्या? हमारे पशुओं का भी चारा निगलने वाले लालू भी विरोध में खड़े रहे। इसी मामले में वे आजकल जेल में है। मिलावटखोरों की सरगना भाजपा भी साथ हो गयी है, कांग्रेस तो इस लूट–गेम की देश में कप्तानी ही कर रही है। निठल्ले नीतीश के लिए भी सत्ता ही महत्वपूर्ण है।

लोहिया के लोग यूपी और बिहार में कुछ ज्यादा ही है। अपेक्षा थी ही लोहिया के सपनों का समाज यहां से बनता दिखेगा। पूरा देश उस रोल मॉडल को स्वीकारता। राष्ट्रपति और भंगी की संतान, 'सबको शिक्षा एक समान' का मन्त्र नीतीश और मुलायम भी बहुत जपते थे। क्या हुआ उस जाप का? मुलायम का पप्पू अखिलेश, लेपटाप बांट रहे हैं और नीतीश सायकिल और अन्य चीजें। क्या इन खैरातों से नए समाज का निर्माण होगा? क्या समाज में समता आ पायेगी?

सरकार की कोई भी योजना सामने आने के पहले ही लूट की योजना बन जाती है। बिहार हो या देश का अन्य प्रान्त क्यों उतावला है खैरात बांटने में? पक्ष हो या विपक्ष, क्या किसी के पास समाज की आतंरिक संरचना और उसकी तासीर और स्थानीय संसाधन को आधार बनाकर विकास का क्या 'मॉडल' खड़ा करने की समझ और तैयारी है? काश्तकार, स्वर्णकार, चर्मकार, शिल्पकार और कर्मकार के उत्पाद को बाजार नहीं मिलेगा तो फिर इनके जिन्दा रहने का विकल्प क्या है? क्या खैरात से ही इनका जीवनयापन चलेगा? क्या इनके बच्चे मध्यान्ह–भोजन से मुक्त हो पायेंगे? और आगे भी मध्यान्ह–भोजन से बच्चे मरते नहीं रहेगे? ●

में दलितों के उत्थान, विकास, कल्याण के लिए जो वायदे किए हैं, वह पूरा करेगी, सरकारी उद्यम–ठेकेदारी, वितरण, खरीददारी में 'डायवर्सिटी सिस्टम' लागू करेगी और सत्ता–सम्पदा में दलितों को उनकी आबादी के हिसाब से हिस्सेदारी देगी। अगर भाजपा सरकार अपने लिए किए वायदे से मुकरेगी या उदासीनता दिखायेगी तो हमारे ये दलित नेता मुखर होकर सरकार पर दबाव बनायेंगे और दलितों के कल्याण की योजनाओं को लागू कराकर, साकार करेंगे। इसलिए किसी पार्टी को अछूत मानकर उससे दूर बैठे रहना अपने अधिकारों पर ही कुल्हाड़ी मारने जैसा है और दूसरी ओर उसके साथ अधिक से अधिक संख्या में जुड़कर उसे सफल बनाकर उस पर अपना अहसान जमाने जैसा है।

हमें प्राकृतिक सिद्धान्त को समझना होगा कि किसी की ज्यादा कडुवाहट या ज्यादा मिठास को कम करना है तो उसमें ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थ पानी मिलाना होगा। यही बात सभी संस्था और राजनैतिक पार्टियों पर लागू होता है। अगर भाजपा ब्राह्मणवादी पार्टी है तो हम ज्यादा से ज्यादा संख्या में उसमें शामिल होकर उसके स्वरूप को बदल सकते हैं, दूर बैठे–बैठे उसके स्वरूप को नहीं बदल सकते और न ही अपनी किन्हीं नीतियों को लागू करवा सकते हैं।

हम भाजपा को ब्राह्मणवादी पार्टी इन धोखेबाज, अज्ञानी, भ्रष्ट, दलितों के प्रति झूठी सहानुभूति रखने वाले दलित हितैषियों से पूछना चाहता हूं कि वे बसपा के इस दोहरे चरित्र की आलोचना करते हुए दलितों को आगाहा क्यों नहीं करते कि अब यह मा. कांशीराम जी की वह ब.स.पा. नहीं है, अब 'सर्वजन पार्टी' है जो ब.स.पा. के नाम पर मा. कांशीराम व बहन मायावती का मुखौटा लगाकर दलितों के थोक वोटों का व्यापार कर रही है। अब बाबा साहब डा. अम्बेडकर व मा. कांशीराम का राजनैतिक चिन्ह 'हाथी' ब्राह्मणों के हाथों बिक चुका है, और उसकी यादगार आज लखनऊ में पत्थरों के हाथियों के रूप में संजोकर रखी गयी है।

आज बहन मायावती का दलित समाज से न कोई सामाजिक रिश्ता है, न पारिवारिक रिश्ता है, और न ही राजनैतिक रिश्ता है। उसका सिर्फ दलितों से रिश्ता है तो बस सत्ता–सम्पदा की अपनी भूख मिटाने के लिए, थोक में उनके वोट पाने के लिए–सवर्णों के विरुद्ध उनकी भावनाओं को भड़काने के लिए, जबकि अब 'बहुजन' के स्थान पर 'सर्वजन' हित का नारा बुलन्द कर रही है। ऐसी हालत में भारतीय जनता पार्टी और उसके भावी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का समर्थन करना और उनका साथ देना कोई देशद्रोह नहीं, बल्कि देशभक्ति है, जो आज दलित समाज के हित की बात है जो उसे शक्तिवान बनायेगा और अपने पैरों पर खड़ा होने में सहयोग देगा। ●

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित।❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 Email-sumanakshar@ymail.com
नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।